प्रातःक्लास 18-4-68 ओमशान्ति "शिव बाबा याद है?"

(आजकल सवेरे 4से 5 बजे तक योग का क्लास होता है, बाप भी आकर सर्च-लाईट देने ड्रील सिखलाते हैं।) ओमशान्ति। अभी यह है ज्ञान का क्लास। वह था योग का क्लास। योग कौन सा, यह बहुत अच्छी रीत समझना है।क्योंकि बहुत मनुष्य हठयोग में फंसे हुये हैं।जो कि हठयोगी मनुष्य ही सिखलाते हैं। यह है राजयोग जोकि परमात्मा सिखलाते हैं।क्यों कि राजा तो कोई है नहीं जो राजयोग सिखावे। यह भगवतो भगवान हैं।राजयोग सिखावे तब ही भविष्य भगवान भगवती बने। यह है ही पुरुषोत्तम संगम युग की समझानी। इसको कहा जाता है पुरुषोत्तम। पुरानी और नई दुनिया काबीच। पुराने मनुष्य, नये देवतायें। इस समय सभी मनुष्य पुराने हैं। पुनर्जन्म लेते2 आकर पुराने बने हैं। नई दुनिया में नई आत्मायें, नये देवतायें होते हैं। वहां मनुष्य नहीं कहेंगे। भल है मनुष्य परन्तु देवी गुण वाले हैं इसलिए देवी देवता कहा जाता है। पवित्र भी रहते हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं काम महाशत्रु है। यह रावण का पहला2 भूत है। कामी कुत्ता बहुत हैं ना। कोई बहुत क्रोध करते हैं तो कहा जाता है कुत्तों मिशल भौं-भौं क्यों करते हो। यह दो बड़े शत्रु हैं।लोभ मोह के लिए भौं2 नहीं कहेंगे। मनुष्यों में सांयस घमंड का क्रोध कितना है। यहभी बहुत नुकसान कारी है। काम का=धूम्र भूत आदि मध्य अन्त दुःख देने वाले हैं। एक दो पर काम क टारो जाते हैं ना। यह भी बातें समझ कर फिर औरों को समझानी हैं। तुम्हारे सिवाय बाप से वर्सा लेने का सच्चा रास्ता तो कोई बता न सके। तुम बच्चे ही बता सकते हो। बेहद के बाप से इतना बड़ा वर्सा कैसे मिलता है। जो किसको समझा नहीं सकते हैं तो जरूर पढ़ाई पर ध्यान नहीं। बुधि योग कहां भटकता है। युध का मैदान है ना। ऐसे कोई मत समझे सहज बात है। तूफान मन को विकल्प ढेर के ढेर न चाहते भी आवेंगे। इसमें मुंझना न है।योगबल से ही माया भागेगी। इसमें पुरुषार्थ बहुत है। धंधे-धोरी में कितने थक जाते हैं. क्योंकि देह अभिमान में रहते हैं। देह अभिमान कारण बहुत बात-चीत करनी पड़ती है। बाप कहते हैं देही अभिमानी बनो। देही अभिमानी बनने से जो बाप समझाते हैं वह औरों को समझावेंगे। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप स्त्री की ही शिक्षादेंगे। बाहरमुखी न होना चाहिए। अन्तर्मुखी होना है। भल बाहर मुखी होना भी पड़े फिर जितनी फुर्सत मिले कोशिश कर अन्तर्मुख होना है। तब ही पाप कटेंगे। नहीं तो न पाप कटेंगे न ऊंच पद पावेंगे। जन्म-जन्मान्तर के पाप सिर हैं। सब से जास्ती पाप ब्राह्मणों के हैं।उन में भी नम्बरवार हैं।जो बहुत ऊंच बनते हैं वही फिर बहुत नीच भी बनते हैं। उनको ही फिर बेगर बनना है। फिर प्रिन्स बनना है। प्रिन्स ही बेगर बनते हैं। अच्छी रीत ड्रामा को समझना है। जो पहले आये हैं वही पिछाड़ी में भी आवेंगे। जो पहले पावन बनते हैं वही पहले पतित बनते हैं। बापकहते हैं मैं भी आता हूं इनके बहुत जन्मों के अन्त में सो भी जब वानप्रस्त अवस्था होती है। इस समय छोटे-बड़े सभी की वान प्रस्त अवस्था। बाप के लिए गायन भी है सर्व की सदगति करने वाला है। वह होते ही हैं पुरुषोत्तम संगम युग पर। यहपुरुषोत्तम संगम युग भी याद करना है। जैसे मनुष्यों को कलियुग याद है। संगम युग सिर्फ तुमको याद है। तुम्हारे में भी नम्बरवार। जो सर्विस पर हैं। बहुतों को अपना गोरखधंधा ही याद रहता है। बाहर से मुंह हटा हुआ हो तो धारणा भी हो। एक गीत भी सुना ना अन्त काल जो स्त्री सिमरे... गीत जो अच्छे2 हैं जिनका ज्ञान से कनेक्शन है वह खानी चाहिए। जैसे छी छी दुनिया से जाना ही होगा। दूसरानयन हीन को राह दिखाओ प्रभु।.... गीत तो मनुष्यों ने बनाये हैं, जिनको इस संगम युग का कुछभी पता नहीं हैं। इस समय सभी अंधे हैं ना। जब पुमु आवे तब ही सभी को रास्ता बतावे। अकेले को तो नहीं बतायेंगे। यह है उनकी शिव शक्ति सेना। अभी बम्बई में एक शक्ति सेना निकली है।क्योंकि आजकल झूठ तो बहुत है ना। आगे जवाहर भी सच्ची थी। फिर जब दाम बढ़ता गया तो झूठ जवाहर आद ऐसी निकली जो सच्ची से भी अच्छी रानक।वैसे यह मीठे योग वाले निकले हैं।वह है हठयोगी।राजयोग तो भगवान

के सिवाय कोई सिखा न सके। भगवान को तो अपना शरीर है नहीं। वह है ही निराकार। बाकी जो भी है सभी शरीरधारी है। ऊंच ते ऊंच तो एक ही बाप है। तुमको पढ़ाते हैं। यह तुम ही जानो। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। किसको शिक्षा देने का भी अक्ल चाहिए। वाईसिंग देनी चाहिए। बड़े2 अखबार में डालना चाहिए। मनुष्य जो योग सिखलाते हैं वह है हठयोग। राजयोग एक ही परम पिता परमात्मा बाप सिखलाते हैं जिस से मुक्ति जीवन मुक्ति दोनों ही मिलती है। हठयोग से दोनों नहीं मिलती है। यह हठयोग तो परमपरा से चला आया है। पुराना है। यह राजयोग सिर्फ संगम पर ही बाप सिखलाते हैं। बाबा ने समझाया था भाषण जब करते हो तो टापिक निकालनी चाहिए। परन्तु ऐसे करते नहीं हैं। श्रीमत पर चलने वाले बहुत ही थोड़े हैं। पाँच पायन्टस लिखो फिर रिपीट करो तो याद आयेगा। फिर एकदम करो। औरों को भाषण करना है। तुमको पढ़ कर तो सुनाना नहीं है। विचार सागर मथन कर भाषण करने से उसमें ताकत रहेगी। और अपने को आत्मा समझो। हम भाईयों को सुनाते हैं। ऐसे समझने से भी ताकत रहेगी। यह तो बहुत ही ऊंच मंजिल है। पान का बीड़ा उठाना कोई मासी का घर नहीं है। जितना तुम स्वस्थ रहतम बनेंगे उतना ही माया का वार होगा। हनुमान भी स्वस्थ थे ना। सब तो कहा राम भी हमको हिलाये तो दिखावे। यह स्थूल बातें नहीं। वह शास्त्रों में तो सभी हैं दन्त कथायें। यह काम जो बाप के सुनहरी ज्ञान सुनने वाले थे वह दन्त कथायें सुन2 एकदम पत्थर बुद्धि बन गये हैं। भक्ति मार्ग में कितनी दुरदशा हो गई है। टीफ्टो भी पिटाई, पैसे भी गंवाई। सीढ़ी से नीचे ही उतरते आये। 84 जन्मों को बताती हैं ना। जो भी भक्ति की है नीचे ही उतरे हैं। अभी बाप ऊपर चढ़ना सिखलाते हैं। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। बुद्धि योग बाप के साथ न लगायेंगे तो जरूर नीचे ही गिरेंगे। बाप को याद करते ही तो ऊपर चढ़ते हो। नेचुरल है। बहुत बच्चे गफलत करते हैं। धंधे आदि में बाप, न ही याद सब भूल जाते हैं। माया तूफान में ला देती है। फलाना ऐसा है, यह करता है, यह ब्राह्मणी ऐसी है, वह अवगुण है। इसमें नुकसान क्या जाता है। सर्व गुण सम्पन्न तो अभी कोई बना नहीं है। कोई का भी अवगुण न देखो, गुण को ग्रहण करना है। अवगुण देखो तो मूंह ही मोड़ दो। सुरसीधी मुरली तो चलती है ना। अनुभवी कारण करते रहना है। बुद्धि से समझाना है। यह बाबा की बातें बिलकुल ही ठीक है। जो समझ न लगे तो छोड़ देना चाहिए। पढ़ाई है कब रुकना न चाहिए। ब्राह्मणी से रूसा गोया बाप से रूसा। ऐसे बच्चे हैं, फिर सेन्टर्स पर आते ही नहीं। विघ्न पड़ते हैं। पार्टियशिप में कितना एक दो से बिगड़ पड़ते हैं। भल कोई कैसा भी है, तुमको मुरली सुनने से मतलब। मुरली जो सुनाते हैं उनमें से अच्छी2 पायन्टस धारण करनी हैं। अच्छा ब्राह्मणी के बारे में कहा नहीं जाता है तो शक्ति से मुरली सुन कर चले जाना चाहिए। लड़ना न चाहिए। हम यहां नहीं आयेंगे। नाराज हो जाते हैं। स्कूल में टीचर से स्टुडन्ट बिगड़ते हैं तो आपस में मिल उनको भगा देते हैं। अन्दर से कोई कुछ नहीं कहते हैं तो एप्लिकेशन भेज कर बदली करा देते हैं। यहां तो वह बात नहीं। अविनाशी बाप आत्मा को तो कोई बदली करा नहीं सकते।

यह भी आता है कि कुछ भी तुम बाप से बैठते हो। बाप आकर सर्चलाईट देते हैं। बाप अपना अनुभव भी बताते हैं ना। जब बैठते हैं तो जो भी अन्धे हैं, वह तो पहले याद आते हैं। भल विलायत में है या बम्बई में है वा कलकत्ता में है, अन्धे बच्चों को याद कर उनको सर्चलाईट देते हैं। बच्चे तो अन्धे हैं। यहां भी हैं। परन्तु याद उनको करते हैं जो अच्छी सर्विस करते हैं। भल वह यहां नहीं हैं। कैसे नाम की आत्मा अथवा शरीर2 बदल जाते हैं तो भी उनकी आत्मा को भी याद करते हैं। वह बहुत सर्विस पर के भी हैं। है तो जरा यहां ही कोई के पैर में। तो उनको भी बाप याद कर सर्चलाईट देते हैं। आशायें बहुत हैं ना। यहां भी जो बहुत सर्विस करते हैं उनको भी याद करते हैं। बाप जानते हैं यह भी हमारे अच्छे बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। यह तो समझकर मनाते हैं। यह लोभ में, मोह में है। क्रोध में है। वह लोभ में है। बाबा ने कहा यहां सर्चलाईट भी दी देते हैं। दो इंजन है ना। यह भी इतना ऊंच पद पाने के लिए

तो ताकत होगी। भल बाबा कहते हैं हमेशा समझो शिव बाबा ही पढ़ाते हैं। तो उनको याद रहेगी। बाकी यह बक तो समझते हो ना यहां दो वक्ती है। और तो कोई में दो वक्ती है नहीं। इसलिए यहां दो बत्तियों के सम्मुख आते हैं ** तो रिफ्रेश अच्छी होते हैं। टाईम भी सवेरे का अच्छा है। स्नान आद किया है तो एकान्त में सवेरे उपर कोठे पर चले जाना चाहिए। बाबा ने कोठे बनाये ही हैं इसलिए। एकांत में जाकर बैठो। पैदल बनो। पादरी लोग भी एकदम सायलेन्स में जाते हैं। किसको देखोगे भी नहीं। कोई देखने भी हैं। सभी एक जैसे तो हो न सकें। वह तो एकदम सायलेन्स में पैदल करते हैं। जरूर क्राईस्ट को ही याद करते होंगे? गाड को तो जानते ही नहीं। अगर गाड को याद करते होंगे तो शिव लिंग बुधि में होगा। अपने ही मस्ती में जाते हैं। तो उन से भी गुण उठाना है। दत्तात्रेय सब से गुण उठाते थे ना। मिशाल एक का ही दिया जाता है। तुम बच्चे भी दत्ता-त्रेय हो नम्बरवार। बाहर में जावेंगे तो असुरों, बन्दरों को ही देखेंगे। इसलिए कोठे बहुत अच्छे हैं। एकान्त में जाकर पैदल करो। जितनी कमाई चाहे कर सकते हो। यहां तो गोरखधंधा आद कुछ है नहीं। टाईम भी बिलकुल अलग रखा है 4 बजे। बाहर में तो सवेरे आने-करने में डर रहता है। यहां तो डर की बात ही नहीं। घर में बैठे हो। पहड़ा भी है। यज्ञ में पहड़ा भी देना पड़ता है। कोई चीज़ पापात्मा न ले जावे। क्योंकि यज्ञ का एक एक कौड़ा बहुत कीमती है। इसलिए सेफ्टी फर्स्ट। यहां तो कोई आवेंगे नहीं। माताएं हैं ना। जानते हैं यहां ज़ेवर आद कुछ है नहीं। इसलिए यहां से कुछ मिल न सके। मंदिर भी नहीं हैं। जो ज़ेवर आद उठा सके। आजकल चोरियां तो सभी जगह होती ही हैं। विलायत में भी पुराने चीज़ें चोरी कर ले जाते हैं। ज़माना ही बिलकुल डर्टी है। यह काम महाशत्रु है ना। वह घुमड़ा2 कर देती हैं। तो सवेरे एक क्लास होता है और स्वर हेल्दी बनने का। और फिर यह है स्वर वेल्दी बनने का। बाप को याद भी करना है।, विचार सागर मंथन भी करना है। बाप को याद करेंगे तो वर्सा भी याद आवेगा। यह युक्ति बहुत ही सहज है। जैसे बाप बीज रूप है, झाड़ के आदि मध्य अन्त को जानते हैं, तुम्हारा भी धंधा यह। बीज को याद करेंगे तो पवित्र बनेंगे। चक्र को याद करेंगे तो धन मिलेगा। चक्रवर्ती राजा बनेंगे। राजा विक्रम और राजा विक्रमजीत। दो सम्वत है ना। मिक्स कर दिया है। रावण आया तो विक्रम सम्वत शुरू हुआ। डेट बदल गई। वह चलता है एक से 2500 वर्ष, फिर 2500 से 5000 वर्ष। हिन्दुओं को तो अपने धर्म का भी पता नहीं है। यह एक ही धर्म है जो अपने धर्म को भूल गये हैं। अधर्मी बन जाते हैं। अपने धर्म और धर्मस्थापक को भूल जाते हैं। तुम समझ सकते हो आर्य समाज कब से शुरू हुआ? आर्य सुधरेली थे सतयुग में। अनआर्य अन-सुधरेली है अभी कलियुग में। अभी तुम आर्य बनते हो। बाप आकर सुधारते हैं। अभी तुम्हारे बुधि में तो सारा चक्र है। जो अच्छे पुरुषार्थी हैं खुद भी जानते हैं दूसरों को भी रास्ता बताते हैं। बाप तो है ही गरीब निवाज़। गांव वालों को भी उठाना है। चित्र तो है। चित्रों का रोल उठाओ। 6 चित्र काफी है। 84 के चक्र का एक ही चित्र अच्छा है। इन में सभी वेलीयर लिखा हुआ है। बुक का बसर भी समझ आ जाये। परन्तु माया ऐसी प्रबल है कि जो एकदम तबाई बना देती है। बाप को भूला देती है। यहां तो दोनो हीलाईट इकट्ठी है। एक बाबा की एक इनकी। दोनो ही जबरदस्त है। परन्तु यह कहते हैं एक ही जबरदस्त लाईट को पकड़ो। यह भी पुरुषार्थी है ना। सभी बच्चे यहां ही भागते हैं समझते हैं डबल लाईट है, बाप सम्मुख बैठ सुनाते हैं। गायन भी है उनके ही साथ मिलना, खेलना, खाना, बैठना। ऐसे भी नहीं यहां ही बैठ जाना है। बहुत में बहुत सात रोज़। बस। हां देखते हैं कोई बहुत सर्विस रूचि है अच्छा शौक है तो .... नहीं तो सीजन में ऐसे बिठा देवें तो ढेर इकट्ठे हो जावें। ड्रामा के प्लैन अनुसार सभी कुछ होता रहता है। तुम बच्चों को आन्तरीक खुशी बहुत होनी चाहिए। वह आन्तरिक खुशी होती है आप समान बनाने की। पढ़ाना भी तो है प्रजा बनावे तब तो राजा बने। पास पॉइंट भी चाहिए। बाबा से कोई पूछे तो बाबा फट से बता देंगे। अपनी

शिकल तो देखो। हमारे में क्या अवगुण है। कोई तो समझते ही नहीं कि हमारे में क्या अवगुण है। इसमें स्तुति निन्दा आद सभी सहन करना पड़ता है। यज्ञ है ना। एक ही विद्या चढ़े खलास। अपने याद के नशे में रहना है। फिर भी कितना प्रबन्ध दिया जाता है। सभी कुछ अच्छा मिलता है। कोई तो ऐसे भी बच्चे हैं जो मिला सो ठीक। यज्ञ के भोजन से बहुत ही लव होता है। बाबा को अनुभव है। सन्यासी लोग आते थे खाकर उठते थे तो थाली पानी से साफ कर वह भी पी जाते थे। महत्व है ना। तुम बी भी आगे चल कर पता पड़ेगा। मनुष्य भूख में झाड़ आद के पत्ते भी खा लेते हैं। तुम्हारे में भी कोई कोई को खाना पड़ेगा। अगर जीते रहेंगे खाना नहीं मिलेगा तो। वह वह खावेंगे जिनका बुधि योग बाहर में भटकता होगा। फैशन ऐसा जोर से पड़ता है तो बात मत पूछो। करोड़ें मनुष्य मरते हैं। अभी तुमको ऐसा जगह लेकर जाते हैं जहां दुःख का नाम नहीं। नाम ही है स्वर्ग। यह चित्र कोई आरिजनल थोड़े ही हैं। वह तो निकल भी न सके। पहले तो आत्मा ऐसा बनाना है। चित्र में तो साफ दिखाया है ऐसा राजा रानी बनना है। वन्डरफुल तो काला चित्र रखा है। अर्थ का तो किसको भी पता नहीं। काले भूत हैं। आत्मा में 5 विकार है ना। तो काले भूतों का मंदिर बना रखा है। आत्मा काली थी। उनको तुम काला कैसे रखेंगे। कितने बेसमझ हैं। अभी तुम समझदार बनते हो। बाप कहते हैं जो बिलकुल ही बेसमझ था उन में ही प्रवेश करता हूं। कहते हैं अपने को ब्रह्मा कहलाते हैं। अरे झाड़ में उपर में भी तो नीचे भी दिखाया है राजयोग की तपस्या कर रहे हैं। मनुष्य तो बिलकुल ही जैसे पत्थर बुधि हैं। कुछ भी नहीं समझते। बात मत पूछो। मेहतर से मनुष्य छू छू करते हैं ना। वह तो मार खाने वाले हैं। इसलिए उन्हींको तो कुछभी न करना है। इसलिए फिर झगड़ा भी हो पड़ता है। शुरू से लेकर इस बात पर ही झगड़ा चला है। बाबा की कैसी युक्ति थी सभी को कहा चिट्ठी लेकर आओ। आओ हम अमृत पीने जाते हैं। अमृत पी फिर विष नहीं पीना है। पहले हम थोड़े ही जानते थे कि इतना झगड़ा निकलेगा। पीछे पता पड़ा। विष न मिलने से कितना झगड़ा हो गया। हमको नदी पार जाना पड़ा। यह बातें कोई समझे बैठ सुने तो बन्दर खावे। कितने बच्चों को सम्भालते थे। कितनी सर्विस करते थे। अभी चोला सफाई करो तो अण्डे ही बाहर निकल आये। देह अभिमान बहुत हैं। सारा दिन देह को ही श्रृंगारते रहेंगे। बाप कहते हैं ये तो पुराना छी 2 सड़ा हुआ चोला है। उनको छोड़ना है। हम वतन में हैं। कपड़ा आद साधारण। अच्छे 2 कपड़ों से भी देह अभिमान आता है। इसलिए ऐसी चीज न पहनना चाहिए। पहनें होंगे तो सभी की नजर चढ़ेगी। आगे पारसी लोग बहुत ही सुन्दर होती थी काली जाली मुंह पर लगा लेती थी तो फिर किसकी नजर न पड़े। जो बाप तुमको इतना गुल 2 बनाते हैं उनके श्रीमत पर तुम क्यों नहीं चलते हो। भल अपना धंधा आद करो साथ में पढ़ाई तो पढ़ो। बाबा को भी बहुत महीनता से समझाना पड़ता है। जो कुछ पास हो गया, फिनिश। उनका चिन्तन नहीं। पर क्या खलास। तुम अपने काम में लग जाओ। बीती को चिन्तवो नहीं। और कोई अड़चन भी न करो। तुमको यह पता नहीं है कि हमको क्या चाहिए। बाप कहते हैं मैं आकर तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूं। तुम्हारे में बुधि में थोड़े ही था कि हम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। सारा विश्व का मालिक बनावेंगे। बाप सभी आशायें बन्द कर देते हैं। नर से नारायण बनना है इसी पुरुषार्थ से। कोई नई बात नहीं। अनेक बार तुम कौड़ी जैसा हीरे जैसा बने हो। गोल्डेन एज से आयरन एज। यह भी तुम सिर्फ जानते हो। तुम्हारे भी नम्बरवार। जाना तो चाहिए एकदम फर्स्ट क्लास नये मकान में। नये चीज में ताकत भी रहती है। पिन प्रति दिन पुरानी होती जाती है। 6 मास, 12 मास हुआ तो फर्क पड़ जाता है। बाप और वर्सा चितनायाद करेंगे और करावेंगे उतना ही उच्च पद पावेंगे। और कुछ भी नहीं है। अलफ और बे। अलफ है दादा इनकी तुम महिमा करते हो। अभी खुद ऐसा बनो पुरुषार्थ कर। अच्छा आज भोग है। मीठे 2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडमार्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

::-शिव बाबा और वर्सा याद है?::-